Scanned by CamScanner

घोष तरंग

शंख

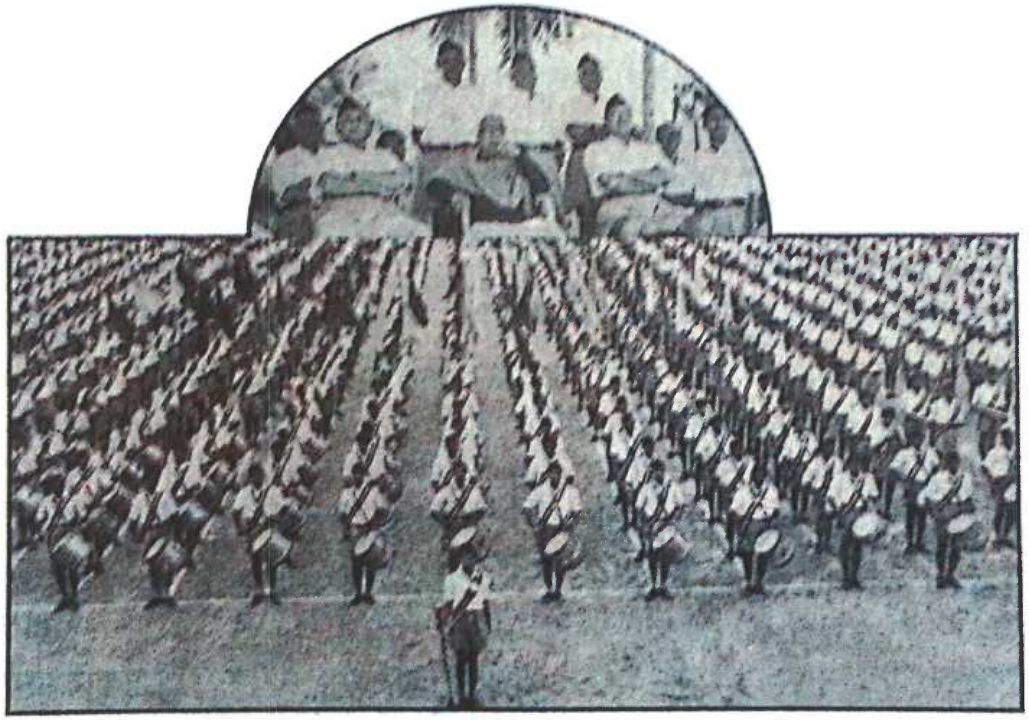

Scanned by CamScanner

प्रकाशन :
साहित्य संगम
74, रंगराव मार्ग, शंकरपुरम्
बेंगलूर - 560 004.
©

प्रकाशन क्रमांक : 44

प्रसिद्धि :
हिंदुसाम्राज्य दिन
ज्येष्ठ शुद्ध त्रयोदशि
प्रमाथि, 26 जून् 1999

मुद्रक :
राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय
गविपुरं मार्ग, केंपेगौडनगर
बेंगलूर - 560 019

मूल्य:- 20-00

केवल व्यक्तिगत उपयोग के लिये

Scanned by CamScanner

प्रस्तावना

"सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।"

यह एक निर्विवाद सत्य है कि कदम से कदम मिलाकर-चलने और स्वर से स्वर मिलाकर बोलने से सबके मन मिलते हैं और इसी का द्योतक है उपर्युक्त वेदमन्त्र । इसलिए समग्र हिंदु समाज को संगठित करने के लिए बद्धपरिकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रमों में सांघिक व्यायाम, सांघिक संचलन और सांघिक गायन को विशेष महत्व प्राप्त हो यह अत्यन्त स्वाभाविक है ।

सांघिक व्यायाम एवं सांघिक संचलन के साथ तालबद्ध सुस्वर घोष भी हो तो सोने में सुहागे की बात हो जाती है और कार्यक्रमों में चार चाँद लग जाते हैं । किंतु इस दृष्टि से उपयोग में आ सकनेवाली किसी प्राङ्गणीय वादन की परम्परा प्राचीन में हमारे यहाँ थी या नहीं और थी तो उसका स्वरूप क्या था इस संबंध में अधिक कुछ ज्ञात नहीं हो पाया है । ऐसी स्थिति में घोष की पाश्चात्य पद्धति का अङ्गीकार करना क्रमप्राप्त था । किन्तु उसके भारतीयकरण की दिशा में हमारे अनेक बंधु सक्रिय हुए जिसके परिणामस्वरूप भारतीय रागों एवं तालों पर आधारित अनेक नवीन रचनाओं का निर्माण एवं प्रयोग अब तक हुआ है । उन्हीं रचनाओं का संकलन 'घोष-तरंग' नामक प्रस्तुत पुस्तिका में हुआ है ।

संगीत को लिपिबद्ध करने की कुछ शैलियाँ भारत में प्रचलित हैं । इनमें भातखंडे की स्वरलिपि का प्रचलन सर्वाधिक है । घोष रचनाओं के लेखन हेतु कतिपय आवश्यक संशोधनों सहित उसी स्वरलिपि का प्रयोग इस पुस्तिका में हुआ है । स्वरलिपि संबंधी आवश्यक जानकारी "घोष परिचय" नामक पुस्तिका में दी गई है । रचनाओं की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया गया है । प्रस्तुत संकलन के उपयोग द्वारा सर्वत्र समरूपता स्थापित हो सकी तो इस पुस्तिका का प्रकाशन सार्थक माना जा सकेगा ।

कुप्.सी. सुदर्शन
सह सरकार्यवाह
रा.स्व.संघ

✣ ✣ ✣

मनोगत

कृष्णयुगीन प्रमाथी संवत्सर के हिंदुसाम्राज्य दिन (26 जून 1999) के प्रेरणादायी, शुभ अवसर पर 'घोष तरंग' का तिसरा परिवर्धित संस्करण आपके हाथों में सौंपते समय हमें अतीव आनंद की अनुभूति हो रही है। इस कृति की प्रथम आवृत्ति 1983 में तथा दूसरा संस्करण 1991 में प्रकाशित किया था।

इस आवृत्ति में शंख, वंशी तथा आनक की नई रचनाओं का समावेश किया है। तथा रचनाकारों की अनुमति से कुछ जगहों पर अल्प परिवर्तन भी किए हैं। स्वर-लेखन के बारे में आवश्यक न्यूनतम जानकारी भी यहां दी गयी है।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में नागपूर, पुणे तथा बेंगळूर के अनेक बंधुओं ने अपार परिश्रम, सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है - हम उनके ऋणी हैं। इसका संगणकीय प्रणाली में समायोजन करने तथा मुद्रण-प्रति बनाने में मणिपाल के प्रोफेसर के. पी. राव तथा बेंगलूर के डॉ. श्रीधरजी का बहुमूल्य सहाय मिला है - हम उनके आभारी है। सौष्ठवपूर्ण मुखपृष्ठ तथा उसके आकर्षक विन्यास के लिए प्रिंट मिडीया मंगळूर के प्रति हम कृतज्ञ हैं। राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय,बेंगळूर ने पुस्तक का सुंदर मुद्रण किया है - इसलिए हम उनके भी आभारी हैं।

आशा है कि विविध वाद्यों की रचनाओं का यह प्रस्तुतिकरण शिक्षार्थियों के लिए उपादेय सिद्ध होगा। इसे और भी अधिक उपयुक्त बनाने हेतु आपके सुझाओं का सदैव स्वागत है।

- प्रकाशक

बेंगळूर
हिंदुसाम्राज्य दिन - कृष्णयुग 5101
26 जून 1999

शंखस्वना

अंतरंग

स्वरलेखन 7

प्रचलनगति

1 किरण 13
2 उदय 13
3 श्रीराम 14
4 गायत्री 14
5 सोनभद्र 15
6 चेतक 16
7 अजेय 17
8 दशमेश 18
9 प्रतिध्वनि 18
10 मंगला 19
11 विनायक 20
12 विक्रम 21
13 परमार्थ 22
14 रणजित 23
15 जगन्नाथ 24
16 साकेत 25
17 यादव 26
18 बजरंग 27
19 वीरश्री 28
20 सागर 29
21 भरत 30
22 भास्कर 31
23 नीलकंठ 32
24 निनाद 33
25 त्रिहुत 34
26 वसंत 35
27 प्रताप 36

मंदगति

1 कावेरी 36
2 वरदा 37
3 मलयप्रभा 37
4 दत्तात्रेय 38
5 निरंजन 39

नैमित्तिकानि

1 स्वागतप्रणाम 40
2 ध्वजप्रणाम 40
3 प्रत्युत्प्रचलनम् 40
4 आद्यसरसंघचालकप्रणाम 41
5 सरसंघचालकप्रणाम 41
6 प्रबोधन 42
7 संघोष 42
8 शारीरिक सूचना 43
9 बौद्धिक सूचना 43
10 कार्यक्रम प्रारंभ 43
11 परिवर्तन 43
12 कार्यक्रम समाप्ति 43
13 भोजन सूचना 43
14 जागरण 44
15 संकट सूचना 44
16 ध्वजावतरणम् 45
17 दीपनिर्वाण सूचना 46
18 दीपनिर्वाण 46
19 सूचनाएं 47

Scanned by CamScanner